Sem. 6, DSE-3

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्रीयता

आधुनिक हिन्दी साहित्य, जो 1857 ई० के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम काल से अस्तित्ववान है, अपनी राष्ट्र-भावना के कारण प्रारंभ से ही चर्चित है। किन्तु इस भावना में सर्वाधिक उफान महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आन्दोलन में पदार्पण से दिखता है। यह समय द्विवेदी-युग और छायावाद-युग का संधिकाल है। इसी समय मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ सामने आती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय राष्ट्रीय-सांस्कृतिक भावना का ऐसा उन्मेष दिखता है कि हिन्दी जगत में वे 'राष्ट्रकवि' के रूप में संपूज्य हैं।

गांधी जी के राष्ट्रीय असहयोग आन्दोलन ने 'भारत-भारती' जैसी कृति को जन्म दिया। इस कृति ने भारतवर्ष के अतीत गौरव, वर्तमान अधोगति और भविष्य की आशा का संदेश दिया। इस रचना ने स्वदेश के प्रति कर्तव्य की प्रेरणा देकर भारतीयों में राष्ट्रीय-चेतना को मुखरित करने का काम किया। 'भारत-भारती' की प्रेरणा है —

"हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी।"
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी॥"

स्वराज्य और सुराज्य की परिस्थिति को प्राप्त करने की अभिलाषा से कवि गुप्तजी ने यही कामना की है कि पशुतुल्य परवशता से हमें मुक्ति मिले, हमारे भीतर की मनुष्यता प्रकट हो तथा कूप-मण्डूकत्व की भावना से हमारा पीछा छूटे। उनकी इच्छा है — "यह आर्यभूमि सचेत हो फिर कार्य-भूमि बने अहा,
वह प्रीति नीति बढ़े परस्पर भीतिभाव भगाइए॥"

कवि गुप्तजी ने अपनी कृति 'रंग में भंग' में देशप्रेम की भावना की हिलोरें भर दी हैं। काव्य-नायक हाड़ा कुंभ में यह भावना उन्नत है। बूंदी के दुर्ग की प्रतिकृति के दर्शन से भी वह भाव-गद्गद हो उठता है। अपने प्राणों का भी मोह त्याग उसकी रक्षा के लिए वह सन्नद्ध हो उठता है। — "किन्तु जीने की अपेक्षा मान पर मरना भला।" उनकी अन्य कृति 'अनघ' का पात्र भी देश और समाज के हित के लिए आत्मबलिदान को कटिबद्ध है — "जहाँ कुछ भी समाज का हित हो, वहीं यह मेरा तनु अर्पित हो।"

सिद्धान्तों

गांधीजी के सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक गुप्तजी मानते हैं कि राष्ट्ररक्षा हेतु अहिंसा का पाठ सदैव काम नहीं आता। इसीलिए वे 'चाप की कोटियों' से शान्ति-स्थापना एवं ~~संन्ति~~ संतापियों से रक्षार्थ ही पापियों को दण्ड देने की बात भी करते हैं। यह राष्ट्र-भावना ही है, जो गुप्तजी भारतीय ज्ञान-समृद्धि पर गहरा विश्वास करते हैं। उनका संपूर्ण काव्य-संसार भारत की प्राचीन संस्कृति, प्राचीन धर्मनीति और राष्ट्र की गौरवपूर्ण गाथा से मण्डित है। वे राष्ट्रीय आंदोलन को भी अपने काव्य में समेटते चलते हैं। उन्हें राष्ट्र का मस्तक ऊँचा उठानेवाले विषयों और व्यक्तियों की खोज रहती है। वे निःशस्त्र बारदोली सत्याग्रह का अभिनन्दन करते कहते हैं —

"उपमा आप बनेगी तू यदि क्षोणी में समता होगी।"

हल्दीघाटी और ग्रीक सैनिकों की रक्तरंजित राष्ट्रीयता से बढ़कर वे इस अहिंसात्मक युद्ध को स्वीकारते हैं। वर्तमान राष्ट्रीयता के प्रति अनुरक्ति का भाव उनके काव्य 'द्वापर' में भी प्रदर्शित हुआ है — "जिस युग में हम हुए, वही तो अपने लिए बड़ा है,
अहा! हमारे आगे कितना कर्मक्षेत्र पड़ा है।"

यही राष्ट्रीयता उनके काव्य 'सिद्धराज' का भी मूल स्वर है। नायक सिद्धराज से संघर्षरत वीर शत्रुओं के वक्तव्यों और आचरणों में इसके संकेत हैं। काव्य के अंतिम सर्ग में साम्प्रदायिक सौमनस्य पर बल दिया गया है, युद्ध का विरोध है और समस्त राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का आह्वान किया गया है। —

"आर्यभूमि अन्त में रहेगी आर्य-भूमि ही
आकर मिलेंगी यहीं संस्कृतियाँ सबकी
होगा एक विश्व-तीर्थ भारत ही भूमि का।"

गुप्तजी की राष्ट्र-भावना का एक पक्ष यह भी है कि वे समाज में स्त्री-पुरुष समानता के प्रबल समर्थक हैं। उनके नारी-पात्र केवल स्त्रीजनित आचरण में संलग्न नहीं, वरन वे पुरुषों की भाँति वीरोचित कर्तव्य में भी संलग्न हैं। 'सिद्धराज' काव्य की सैनिक वेश धारिणी दुर्ग-रक्षक नारियों की यह मूर्ति कितनी भव्य और दिव्य है —

"वामाएँ अनेक, दीर्घ शूल लिए दाहिने
हाथ में, लगाम धरे बाँये हाथ में, कसे
क्षीण कटि जटिल विचित्र कटि-बन्धों से,"

स्पष्टतः गुप्तजी का काव्य-संसार राष्ट्रीयता के भाव से सराबोर है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त कवि हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति के नवीन उज्ज्वल रूप को महत्व दिया है। गांधीजी ने भी उनकी राष्ट्र-भावना को लक्षित कर कहा था - "मैं तो मैथिलीशरणजी को इसलिए बड़ा मानता हूँ कि वे हमलोगों के कवि हैं और राष्ट्रभर की आवश्यकता को समझकर लिखने की कोशिश कर रहे हैं।" देश-भक्ति, बंधुत्व भावना, राष्ट्रीयता, गांधीवाद और मानवता के अमर गायक गुप्तजी के काव्य का मूल स्वर राष्ट्र-प्रेम, आजादी एवं भारतीयता है। वे भारतीय संस्कृति के अमर गायक हैं।